ANUBHAVS

नही शिकायत राघवा

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com

– प्रकाश नाईक

जीवन मे जब सभी घटनायें अपने मन मुताबिक होती रहती हैं, तो परमेश्वर की ऐसी ही कृपादृष्टी भविष्य में भी बनी रहें अत: सभी लोक भक्ती तो करते रहते हैं परन्तु उसमें आर्तता नहीं होती। जब हम प्रारब्धवश किसी परिस्थिती के फेरे में फँस जाते हैं तभी हम आर्ततापूर्वक भगवान की गुहार लगाते है, तात्पर्य यह है कि संकटों के समय उसमें आर्तता भी आ जाती हैं। संकट दूर होते ही हम निश्चित रूप से उस परमात्मा को 'थैंक्स' कहते हैं। उसका आभार मानते है। परन्तु संकट के दूर न होने और अपने उद्ध्वस्त होने की नौबत आने पर भी, परमात्मा के प्रति कृतज्ञता बरकरार रखते हुये उसकी भक्ति व सेवा में अखंडता कायम रखने वाले भक्त यद्यपि हम-आप जैसे सामान्य भक्त प्रतीत होते है परन्तु वास्तव में वे असामान्य ही होते हैं।

अंबरनाथ उपासना केन्द्र के एक भक्त राजेन्द्र पटेल व उनकी पत्नी सौ. ज्योती पटेल को बापू परिवार में आकर आठ वर्ष हो चुके हैं। परमपूज्य बापू के प्रत्येक कार्य में तन-मन-धन से सहभागी होते हुये हम उन्हें देखते है। उनकी दिनचर्या बापूस्मरण से ही शुरु होती है और बापू स्मरण से ही समाप्त होती है। उन्हें दो लड़के हैं। बड़ा श्रीकांत १८ साल का और छोटा सुमित १५ साल का है। इस चार सदस्यीय परिवार में पाँचवा सदस्य 'बापू' ही है।

बापू की कृपा से उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो रहा था। साथ में भक्ती व सेवा का जोड़ तो था ही। परन्तु प्रारब्ध के भोग तो सभी को भुगतने ही पड़ते हैं। गत वर्षीय आषाढ़ माह की कृष्ण अमावस्या हमारे इस गुरु बंधु के लिये काल रात्र ही साबित हुयी। उसी दिन शाम को पटेल को अचानक एक फोन आया, 'तुम्हाला लड़का लोनावला में दुर्घटना ग्रस्त हो गया है। तुम तुरन्त यहाँ आ जाओ।' पटेल को पसीना आ गया। उसके पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक गयी। जब उनकी पत्नी को यह खबर मिली तो वह थर-थर कांपने लगी। परन्तु फौरन निकलना आवश्यक था। पटेल सपत्नीक व सुमित के साथ एक-दो और लोगों को लेकर चल पड़े। परन्तु उस परिस्थिती मे भी उन्होंने चरखा-योजना के एक कार्यकर्ता से फोन पर रोते-रोते कहा, 'काका, श्रीकांत की इस खबर को बापू-दादा को बता देना।' दु:ख के अतिरेक के कारण रामरक्षा नहीं बोली जा रही थी। फिर भी पूरी यात्रा के दौरान रुकते-रुकाते उन्होंने उसका पठन शुरु ही रखा।

श्रीकांत लोनावला में होटेल मैनेजमेंट कालेज मे द्वितीय वर्ष का छात्र था। तथा फोन कॉलेज से ही आया था। वहाँ पहुँचने पर उन्हें गेस्ट रुम में बैठ़ाकर पटेल परिवार को सांत्वना देते हुये कॉलेज स्टाफ ने बताया कि,'श्रीकांत बच नहीं सका!' इस वज्राघात से उस क्षण उन माँ-बाप की स्थिती का वर्णन कोई भी, कभी भी, किन्हीं शब्दों मे भी नहीं कर सकेगा।

हुआ यह था कि श्रीकांत जब अपने मित्रों के साथ पहाड़ के ऊपर से नीचे बह रहें पानी में खेल रहा था तभी अचानक उसका पैर फिसल गया। तेज़ गति से पहाड़ से नीचे गिरते समय उसने जिस पत्थर का सहारा लिया वह भी उसके पीछे-पीछे गिरते हुये उसके शरीर पर ही जा गिरा। नीचे श्रीकांत और उसके ऊपर वह काफी बड़ा पत्थर। श्रीकांत बच ही नही सका। पटेल के प्रारब्धों का पहाड़ ही उसके नसीब पर प्रहार करके निकल गया। उन्नीस वर्ष के लड़के का शव देखने का दुर्भाग्य प्राप्त माँ-बाप का दु:ख भला किन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है?

काफी देर बाद शोकाकुल पटेल परिवार किसी तरह अपने दु:ख पर काबू पाकर आगे की तैयारी में लग गया। दूसरे दिन अंबरनाथ उपासना केन्द्र में हम सभी को इस दुर्घटना की जानकारी मिली और सभी लोग पटेल के घर पर पहुँचने लगे। घटना धक्कादायक और किसी भी सांत्वना से परे थी। आने वाले सभी लोगों से पटेल, 'मेरा श्रीकांत मेरे बापू के पास ही गया है।' यह एक वाक्य कहते थे।

अंतिम संस्कार के समय उनके गांव के बहुत सारे लोग उपस्थित नहीं हो सके क्योंकि इतने कम समय में उनका पहुँचना संभव नहीं था। अत: अगली सभी अत्यंविधियों के लिये पटेल परिवार दूसरे ही दिन उनके गाँव के लिये रवाना हो गये। वहाँ पर पंद्रह दिनों के दौरान पटेल का 'रामनाम' बही लिखना बंद नही था। सौ.ज्योति पटेल भी बता रही थी कि उस दिन कौन जाने कैसे, परन्तु सतत मेरे कानों में कोई तो, 'काय गोड गुरुची शाळा, सुटला जनक जननीचा लळा' यहीं वाक्य लगातार गुनगुना रहा था। इसी निरंतर भावना के चलते मेरा दु:ख भी हलका हो गया।

पंद्रह दिनों के बाद पटेल परिवार वापस अंबरनाथ आ गया। पिछले पाँच वर्षों में स्वयं पटेल ने एक नशा पकड़ लिया है। चरखा चलाने का। सन् २००३ में उन्होनें चरखा लिया और अंबरनाथ-सी.एस.टी-अंबरनाथ का नौकरी के लिये करने वाला प्रवास व गृहस्थी संभालते हुये भक्ति भावसे व सेवाभाव से चरखा चलाना शुरु किया। पत्नी व श्रीकांत भी उससे अपनी-अपनी क्षमतानुसार सहभागी हुये। जिस दिन लड़के का अंतिम संस्कार करके पटेल अपने घर अंबरनाथ लौटे, उस दिन भी पटेल ने चरखा चलाया और पूरी पाँच लड़ियां बनाकर ही सोने के लिये गये।

पिछले पाँच वर्षों में श्री. पटेल ने घर पर चरखा चलाकर थोड़ी-थोड़ी नही बल्कि पूरी चार हजार लड़िया संस्था को दी हैं।

उनको सांत्वना देने के लिये जब हम एक बार फिर उनके घर गये तो उनके द्वारा व्यक्त किये गये विचार उन्ही के शब्दों में लिख रहा हूँ।

'मुझसे जब कुछ लोग पूँछते हैं कि, तुझे बापू के पास जाकर क्या मिला? तभी मेरा कलेजा फट जाता है और मुझे काफी दु:ख होता है। परन्तु मैं ऐसे लोगों से विवाद के चक्कर में नहीं पड़ता। मुझे जो मिला उसकी लिस्ट काफी बड़ी है।' बापू कहते है कि, ''परमात्मा जब मानव रूप में अवतरित होता है तो वह मानवी नियमों का पूरा-पूरा पालन करता है। उसे भी भोग-भोगने ही पड़ते हैं।'' बापू के प्रवचनों से मुझे काफी कुछ समझ में आया है। मुख्य बात तो यह है कि, दु:ख सहन करने की शक्ति मिली है। परमात्मा के पास किसी का भी बुरा करने की क्षमता नहीं होती, यह मालूम पड़ा। हम तीनों आज शरीर, मन व बुद्धी से सही सलामत हैं तो सिर्फ बापू कृपा से ही। मेरे बापू का मुझपर पूरा ध्यान हैं। इसकी अनुभूमि भी मुझे होती ही रहती है। मेरे जीवन में घटित होने वाली अच्छी-बुरी घटनायें सब मेरे ही कर्मो का फल हैं। मेरी भक्ति साधारण होने के बावजूद भी वो मुझपर उसका अकारण-कारुण्य बरसा ही रहा है। श्रीकांत की याद करके बहुत बार मन कचोट उठता है, परन्तु उसी समय बापूराया मुझे पुरुषार्थ गंगा, मधुफल वाटिका पढ़ने की बुद्धि भी देता है। उसके 'मृत्यु यानी परमेश्वर के पास जाने का एक दरवाजा' जैसे वाक्य मेरा दु:ख हल्का करने में मददगार साबित होते हैं। बापू ने श्रीकांत से तीन दिन गायत्रीमंत्र पठन उत्सव, पादुका पूजन, श्रीमद्पुरुषार्थ ग्रंथराज प्रथम खण्ड 'सत्यप्रवेश' का पारायण करवा लिया था। पादुकापूजन में बापू जी ने स्वयं आकर जानें की निशानी भी हमें उसके द्वारा प्राप्त जानकारी से मिली थी। श्रीकांत को निश्चित रूप से बापू और भी अच्छी जगह जन्म देंगे, ऐसा हमारा दृढ़-विश्वास है। बापू, मैं तुमसे मन:पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि हमें तुम्हारी अंगुली न छोड़ने की बात सदैव याद रहने दो। तुम्हारी सेवा और भक्ती में मुझे मेरे शरीर की भी याद नहीं रहीं तो भी कोई हर्ज़ नही है। मेरे अंदर का रावण तो मरेगा ही, तुम्हारे द्वारा दी गयी यह गवाही मुझे काफी धैर्य प्रदान करती है।

जे जे मज साठी उचित। तेचि तू देशील खचित।
हे मात्र मी नक्की जाणीत। नाही तकरार राघवा।।

ANUBHAVS

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com